Group-B, (S.D) (H/S) Group-A (S)
B.com-1 → Paper-1 व्यावसायिक संगठन (प्रतिष्ठा) × (B.O)

By, सुजीत कु० सुमन
आर. एन. कॉलेज
(हाजीपुर)

Q.No-1. एकाकी व्यापार से आप क्या समझते हैं? इसकी विशेषताओं का वर्णन करें।

उत्तर

व्यावसायिक संगठन का सबसे प्रारम्भिक स्वरूप एकाकी व्यापार है। वर्तमान समय में जितनी भी व्यवस्थायें व्यवसाय के क्षेत्र में प्रचलित हैं, सभी इसी व्यवस्था के विकसित स्वरूप है। आधुनिक वैज्ञानिक युग में भी अन्य व्यवसायिक स्वरूपों की अपेक्षा एकाकी व्यापार बहुसंख्यक में पाया जाता है।

एकाकी व्यापार से आशय व्यवसायिक संगठन के उस स्वरूप से है, जिसको एक व्यक्ति स्थापित करता है, आवश्यक पूंजी उपलब्ध करता है, संचालन करता है, लाभ एवं हानि का स्वयं अधिकारी होता है तथा व्यापार का समस्त उत्तरदायित्व उसी व्यक्ति के कंधों पर होता है, इसी कारण इसे एकाकी व्यापार, व्यक्तिगत साहसी, व्यक्तिगत व्यवस्थापक इत्यादि नामों से पुकारा जाता है।

प्रो॰ हैने के अनुसार, - " एकाकी व्यापार व्यवसाय का वह स्वरूप है जिसका प्रमुख एक ही व्यक्ति होता है, जो उसके समस्त कार्यों का उत्तरदायी होता है। उसकी क्रियाओं का संचालन करता है, एवं लाभ-हानि का सम्पूर्ण भार स्वयं ही उठाता है।"

एकाकी व्यापार के परिभाषाओं के अध्ययन से कुछ विशेषताएँ पाई जाती हैं जो निम्न हैं:—

(i) एकाकी स्वामित्व —) इसके नाम से ही विदित है, एकाकी व्यापार का स्वामित्व एक ही व्यक्ति के हाथ में होता है। उसके समस्त अंगों के लिए वह स्वयं उत्तरदायी होता है। व्यापार को प्रारंभ करने पर उत्पादन के समस्त साधनों का प्रबंध उसी के द्वारा होता है तथा अन्त होने पर उन सब का अधिकारी भी वह स्वयं होता है।

(P.T.O)

(ii) स्थापना में सुगमता → एकाकी व्यापार की स्थापना बड़ी सुगमता से की जाती है। चूँकि इसमें वैधानिक उपचारों का पालन नहीं करना होता है अतः एक सामान्य बुद्धि का व्यक्ति भी इसको आसानी से प्रारंभ कर सकता है।

(iii) शीघ्र निर्णय → व्यापार में अवसर से लाभ उठाने अथवा कठिनाईयों का सामना करने के लिए शीघ्र निर्णय की आवश्यकता होती है। चूँकि एकाकी व्यापारी को किसी अन्य व्यक्ति से विचार-विमर्श करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, वह संकट तथा अवसर आने पर महत्वपूर्ण बातों का शीघ्र निर्णय करके आवश्यक कार्य कर सकते है।

(iv) मितव्ययिता → एकाकी व्यापार में धन का दुरुपयोग नहीं होता। एकाकी व्यापार की पूँजी के साधन सीमित होने से वह उनका अधिकतम सदुपयोग करता है। क्योंकि वह जानता है कि लेश-मात्र के दुरुपयोग से जो हानि होगी उसे सहन करना व्यापारी को ही होगा।

(v) गोपनीयता → व्यावसायिक रहस्य प्रत्येक व्यापार की सफलता का मुख्य कारण होता है। वर्तमान प्रतिस्पर्द्धा के युग में गोपनीयता का होना और भी आवश्यक है। केवल एकाकी व्यापार में ही व्यापार का रहस्य सबसे अधिक गुप्त रहता है क्योंकि व्यापार संबंधि सभी बातों को स्वामी के अतिरिक्त कोई नहीं जान पाता। इसके विपरीत अन्य प्रकार के व्यवसायों में व्यवसायिक रहस्य गुप्त रखना अपेक्षाकृत कठिन होता है।

(vi) वैधानिक प्रतिबंधों से मुक्त → प्रत्येक देश में एकाकी व्यापार पर वैधानिक प्रतिबंध नहीं लगाये जाते हैं और अगर लगाये भी जाते हैं तो नाम-मात्र के। इसकी तुलना में साझेदारी तथा कम्पनी पर अनेक वैधानिक प्रतिबंध लगाये जाते हैं।

Scanned with CamScanner

(viii) कार्य में लगन → व्यापारी का अपने व्यापार में व्यक्तिगत हीत होता है। समस्त लाभ पर अधिकार की भावना बहुत प्रेरणा देती है। अतः व्यापारी व्यापार का काम बहुत परिश्रम, लगन तथा चतुराई से करता है ताकि लाभ अधिकतम हो।

(viii) उदार साख → एकाकी व्यापार का असीमित दायित्व होने के कारण तथा बाजार में उसकी व्यक्तिगत ख्याति होने के कारण व्यापारी को अपने व्यापार के लिए उदार साख प्राप्त हो सकती है। ऋणदाता को यह विश्वास रहता है कि यदि उसका कर्ज व्यापार की सम्पत्ति से नहीं चुका सका तो एकाकी व्यापार की व्यक्तिगत सम्पत्ति पर भी अधिकार प्राप्त कर सकता है।

(ix) व्यक्तिगत सम्पर्क → एकाकी व्यापारी अपने ग्राहकों के बीच में सदा रहता है और उसे अपने व्यक्तिगत नम्रता तथा व्यापारिक कुशलता से अधिक ख्याति प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

(x) समस्त लाभ पर एकाधिकार → एकाकी व्यापारी का समस्त लाभ पर एकाधिकार होता है। अतएव यह भावना कि समस्त लाभ इसकी झोली में ही जायेगा बड़ी प्रेरणा प्रदान करती है। इसी प्रेरणा से प्रभावित होकर वह अधिक परिश्रम, लगन तथा चतुराई से कार्य करता है,

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि वर्तमान आधुनिक युग में व्यापार का क्षेत्र सीमित एवं संकुचित हो गया है, तथापि व्यावसायिक संगठन के इस स्वरूप में कुछ ऐसे गुण हैं, जिनके कारण यह आज तक जीवित है तथा भविष्य में भी जीवित रहेगा।

—०—

Scanned with CamScanner